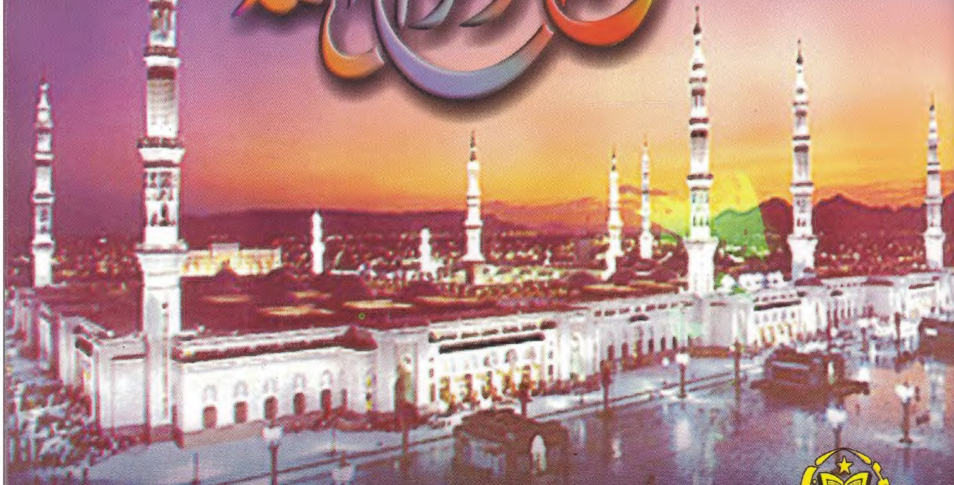
مارچ ۲۰۰۹ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰہُ تبارک وَتَعالیٰ قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰہِ نُوْرٌ وَ کِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب





موسسۂ نور ہدایت، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ۔۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk, Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL

Lucknow

March 2009

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष-5

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक - 9

मार्च - 2009

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
''लखनऊ''

संरक्षक
मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

वार्षिक - 200 रु   मिलने का पता   क़ीमत - 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत। फोन न० 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

मार्च–2009ई०

रबीउल अव्वल- रबीउस्सानी 1430हि०

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

WEBSITE:
www.noorehidayat.com
www.al-ijtihaad.com

E_mail:
noorehidayat.@yahoo.com
noorehidayat.@gmail.com

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः 60 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः 50 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः 30 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः 15 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा एक ज़िन्द-ए-जावेद नमून-ए-अमल

प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला

अनुवादकः बिन्ते ज़हरा नक़वी ''नदल हिन्दी'' साहेबा

इस्लामी तहज़ीब में हज़रत मुहम्मद[स०] बिन अब्दुल्लाह की शख़सियत एक तारीख़ी शख़सियत नहीं है बल्कि एक अबदी हक़ीक़त भी है और ऐसी जो काएनात की सबसे बड़ी हक़ीक़त है। पैग़म्बर[स०] की ज़ात ज़मानो मकान में चमकने के साथ-साथ इरफ़ान और बलन्दी की हामिल भी है।

हज़रत मुहम्मद[स०] से मुहब्बत और उनकी नुबुव्वत पर यक़ीन, तमाम दुनिया के मुसलमानों को मुत्तफ़िक़ और मुत्तहिद करने की सबसे अहम ताक़त है। नुबुव्वत और पैग़म्बर से लगाव, मुसलमानों को एक आलमी इकाई की सूरत में पेश करती है। हज़रत मुहम्मद[स०] से लगाव और मुहब्बत और उनकी सुन्नत की पैरवी की वजह से, एशिया से लेकर अफ़्रीक़ा तक के मुसलमान आपस में हैरतनाक एका रखते हैं।

यहाँ तक कि ग़ैर भी इस हक़ीक़त को मानने पर मजबूर हैं। एक मग़रिबी लेखक लिखता हैः-

''मुसलमनों को हज़रत मुहम्मद[स०] से जो लगाव है हम मग़रिब के रहने वाले इससे अन्जान हैं और मुसलमानों के समाज में अक़ीद-ए-नुबुव्वत के अज़ीम किरदार को समझने से हम आजिज़ हैं। हम लोग पैग़म्बरे इस्लाम को सिर्फ़ एक तारीख़ी शख़सियत की नज़र से देखते हैं। जबकि मुसलमानों के नज़दीक उनकी हैसियत इससे कहीं ज़्यादा है और यही वजह है कि जाने-अन्जाने में हम मुसलमानों के दिलों को तोड़ने वाली बातें पैदा करते हैं। मैं यूरोप से इण्डोनेशिया तक जहाँ भी गया हर जगह उम्मते इस्लामिया की रगों में इश्क़े मुहम्मदी को ख़ून की तरह दौड़ता हुआ देखा, मुसलमानों के बीच भाईचारगी और एकता की सबसे अहम वजह मुहम्मद[स०] से इश्क़ है। यह अलग बात है कि पैग़म्बरे इस्लाम[स०] से मुसलमानों की मुहब्बत कई अन्दाज़ में पाई जाती है। उत्तरी अफ़्रीक़ा में पैग़म्बरे इस्लाम[स०] की शान में आरिफ़ाना और आशिक़ाना शेअ्र पढ़े जाते हैं। हिन्दुस्तान में पैग़म्बरे अकरम[स०] की पैदाईश के दिन को बड़ी शान और शौकत के साथ मनाया जाता है, क़व्वालियाँ होती हैं, इस रस्म को वह मीलाद कहते हैं। इस्लाम की एक इम्तियाज़ी शान ये भी है कि उसने अपने मानने वालों में पैग़म्बर[स०] से इस तरह के वालिहाना इश्क़ और मुहब्बत पैदा करने के बाद भी, दूसरे मज़हबों की तरह इन्सान और ख़ुदा के बीच की सरहद को खोने नहीं दिया।''

पैग़म्बरे इस्लाम[स०] बहुत सी ख़ुसूसियात के हामिल थे। जैसे गुनाह और शक से उनका महफ़ूज़ होना, उनकी बेमिसाल रहनुमाई, लाजवाब क़ुव्वते तश्कील और तामीर, शिर्क और औहाम और ज़ुल्म और सितम से बेमिसाल लोहा लेना। इसके बावजूद मुसलमान इस बात की ताकीद करते हैं कि उनके नबी इन्सान थे। मुसलमान हर रोज़ कई बार दुहराते हैं और कहते हैं ''अश्हदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू'' (मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद[स०] सिर्फ़ ख़ुदा के बन्दे और उसके रसूल हैं) और यह नुकता दुनिया के मज़हबों की तारीख़ में बेमिसाल है।

इस्लाम ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि हज़रत मुहम्मद[स०] की वह ज़ात है जो ख़ुदा की महबूब और मख़लूक़ की चुनी हुई थी, वह ऐसी शख़सियत थी जिसके लिए ज़मान और मकान बनाये गये यानी मुहम्मद[स०] इन्सान थे, और सारी ज़रूरतें जो इन्सानों को पेश आती हैं उनके अन्दर पायी जाती थीं और दूसरों की तरह मुकल्लिफ़ थे यानी उन अहकाम को जो उनके ज़रिये

लोगों तक पहुँचे थे, अन्जाम दें बल्कि कुछ मुश्किल अहकाम उनके लिए ख़ास थे (रसूले ख़ुदा^स० पर तहज्जुद और रात की नाफ़िला नमाज़ें वाजिब थीं)।

दूसरे मज़हबों में पैग़म्बरों का इलाही तसव्वुर पैदा हो गया है और जिस मेहनत और रियाज़त को आम लोगों के लिए तैय किया है वह ख़ुद उनसे अलग थी। इसके उलट इस्लाम में पैग़म्बरे इस्लाम^स० ने ख़ुद को किसी मेहनत व रियाज़त से कभी अलग नहीं रखा बल्कि दूसरों की तरह बल्कि उनसे भी ज़्यादा ख़ुदा का ख़ौफ़ दिल में था। वह दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा इबादत करते थे, ज़्यादा नमाज़ें पढ़ते थे, ज़्यादा रोज़े रखते थे, जेहाद करते थे, ख़ुदा की मख़लूक़ पर एहसान करते थे और अपनी और दूसरों की ज़िन्दगी के लिये कोशिश करते रहते थे। ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए किसी पर बोझ नहीं बने। यह एक ऐसी बात है जिसकी अहमियत और अज़मत को दूसरे मज़हबों जैसे बौद्ध मत और ईसाइयत में मज़हबी रहबरों के सिलसिले में मौजूद अक़ीदों और इस्लामी अक़ीदों से एक दूसरे में ग़ौर करने के बाद मालूम किया जा सकता है।

मुसलमान अपने पैग़म्बर से वालिहाना मुहब्बत करते थे और उनका अक़ीदा यह है कि वह (हज़रत मुहम्मद^स०) ख़ातमुल मुर्सलीन थे, अफ़ज़लुल अम्बिया थे, ख़ुदा के महबूब थे और ज़मानो मकान की पैदाइश की ज़रूरत थे। लेकिन इसके बावजूद उनका यह अक़ीदा है कि पैग़म्बरे इस्लाम सिर्फ़ मसल-ए-वह्यि और लवाज़िमे वह्यि (जैसे इस्मत और मोजिज़ा वग़ैरा) की वजह से दूसरे इन्सानों से अलग थे। वह्यि उन्हें इन्सानियत से अलग नहीं करती बल्कि इन्सानियत का ऊँचा व बलन्द नमूना बनाकर पेश करती है और इन्हीं वजहों और दलीलों की बुनियाद पर वह दूसरों की रहबरी करने वाले हैं।

पैग़म्बरे इस्लाम^स० का दूसरे मज़हबी रहनुमाओं और दीन लाने या बनाने वालों पर दूसरी बड़ी ख़ास बात, मुक़ाबले में आना, जेहाद, तामीर व तश्कील है। ज़्यादातर मज़हबों में पैग़म्बर या दीनी पेश्वा के बारे में ख़याल सिर्फ़ मानवी, रूहानी और रोहबानी थे। ग़ैर इस्लामी दीनों में नुबुव्वत व बेसत का मक़सद सिर्फ़ रूह की पाकी और आख़िरत की कामियाबी का हासिल करना था, दीन का दुनिया से कोई ताल्लुक़ नहीं है और सियासत और समाज, दीनी रहबरों के दायरे से बाहर था। लेकिन इस्लाम में नुबुव्वत का मक़सद ख़ुदा की पहचान और उससे क़रीब होना और उसी के ज़रिये ज़ुल्म और जेहालत वग़ैरा के ख़िलाफ़ खड़ा होना है।

इसी वजह से पैग़म्बरे इस्लाम^स० दूसरे मज़हबों के लाने और बनाने वालों के उलट एक ''पैग़ाम पहुँचाने वाले'' न थे बल्कि ख़ुदा के अहकाम को बताने और उन पर अमल करवाने के लिए भी क़दम उठाये और शिर्क व तारीकी और ज़ुल्म और जाहिलियत की जड़ काटने के लिए खड़े भी हुए और ऐसे समाज और तहज़ीब की बुनियाद रखी और एक ऐसी उम्मत बनायी जिसने क़ैसर और किसरा के महलों को हिलाकर रख दिया और बादशाहों के तख़्त व ताज को झुका दिया।

पैग़म्बर के बारे में यह ख़याल जो इस्लाम ने पेश किया है और जो हज़रत मुहम्मद^स० की ज़िन्दगी में सामने आया है, दूसरे मज़हबों में दीनी पेश्वाओं से बहुत ऊपर है। दूसरे मज़हबों में रहबरों के इरफ़ानी और रूहानी तजरुबात, समाज से दूरी, रेगिस्तानों और पहाड़ों, दैर में रहने की वजह होती है। लेकिन इस्लाम में जैसा कि अल्लामा इक़बाल ने निशानदही की हैः पैग़म्बर इरफ़ानी तजरबात की गहराईयों से समाजी ज़िन्दगी तक वापस आता है और ज़माने के हालात में दाख़िल होता है ताकि तारीख़ के बहाव को क़ाबू में करे और इस तरीक़े से कमाले मतलूब की एक नई दुनिया पैदा कर सके''।

इस तरह बक़ौल उस्ताद शहीद मुतह्हरी ''इस्लाम में पैग़म्बर रूहानी रास्तों से ख़ल्क़ की तरफ़ से ख़ालिक़ की तरफ़ लौटता है यानी .... लेकिन इसका खुला हुआ नतीजा यह होता है कि जब वह इन्हीं रास्तों से मख़लूक़ की तरफ़ वापस आता है तो अपने साथ एक इरादा लेकर लौटता है इन्सानी ज़िन्दगी के सुधार का इरादा और इस तरह .... पर उसका ख़ात्मा होता है।''

इस्लाम की यही दो बातें यानी पैग़म्बर का इन्सान होना और इज्तेमाई व सियासी ज़िन्दगी में पैग़म्बर का ख़ुद भी शामिल होना है कि पैग़म्बर अपने मानने वालों

बक़िया पेज ....9 पर

हुसैन[अ०] और इस्लाम

सैय्यिदुल उलमा के ख़ुतबे (7)

सैय्यिदुल उलमा[गु०म०] की यह तक़रीर पाकिस्तान रेडियो स्टेशन लहौर से 10 मुहर्रम 1375[हि०] में प्रसारित हुई।

सलामुन अलैइकुम। यह ज़माना वह है जो हुसैन[अ०] के साथ ख़ासकर जुड़ा हुआ है जिसमें जैसे हर दरो दीवार से हुसैन-हुसैन[अ०] की आवाज़ सुनायी देती है। इसलिए इस वक़्त "हुसैन[अ०] और इस्लाम" के उनवान से इस पर रौशनी डालना चाहता हूँ कि हुसैन[अ०] का इस्लाम से और इस्लाम का हुसैन[अ०] से क्या ख़ास ताल्लुक़ है और इस्लाम के मानने वालों के लिए हुसैनी यादगार क़ायम करने की क्या अहमियत है।

हुसैन[अ०] और इस्लाम के आपसी ताल्लुक़ को दिखाने के लिए सबसे पहले जो अलफ़ाज़ मिलते हैं वह यह कि हुसैन और इस्लाम में वह ताल्लुक़ है जो एक गोद में पले हुए दो बच्चों में होता है। पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा[स०] की गोद में इस्लाम परवान चढ़ रहा था और उसी गोद में हुसैन[अ०] ने परवरिश पायी। हुसैन[अ०] ने आँख खोल कर इस्लाम को देखा और इस्लाम ने बढ़कर हुसैन[अ०] को गले लगा लिया और उसी वक़्त अहद और पैमान हो गया कि जब इस्लाम पर वक़्त पड़ेगा तो हुसैन[अ०] उसके काम आयेंगे और पैग़म्बरे इस्लाम ने इस मुआहेदे को मज़बूत कर दिया उस रूहानी मुक़ाबले में जो मुबाहले के नाम से हुआ था, उस कमसिनी की हालत में हुसैन[अ०] को अपनी गोद में लाकर और इस तरह जैसे इस्लाम का हाथ हुसैन[अ०] के हाथ में दे दिया कि देखो आज मैं मौजूद हूँ, मैं तुमको इस्लाम की मदद के लिये अपने साथ ले गया। कल को जब मैं न हूँ और मेरे इस्लाम पर वक़्त पड़े तो इस्लाम की मदद के लिये यूँ ही चल खड़े होना।

वह वक़्त 60[हि०] में आया और हुसैन[अ०] उसी तरह इस्लाम को बचाने के लिये निकल खड़े हुए जिस तरह उन्होंने अपने बुज़ुर्ग दादा को निकलते हुए देखा था।

फिर हुसैन[अ०] और इस्लाम के आपसी ताल्लुक़ के लिये यह अलफ़ाज़ भी कह सकता हूँ कि उनमें वह ताल्लुक़ है जो लफ़्ज़ और माने में, मत्न और शरह में, इजमाल और तफ़सील में, क़ुरआन और उसकी तफ़सीर में और इन्सान और उसकी तस्वीर में होता है।

इस्लाम कुछ अक़ीदों और आमाल का मजमुआ है और हुसैन[अ०] की पूरी ज़िन्दगी उन अक़ीदों और आमाल का एक नमूना थी और हज़रत इमाम हुसैन का यज़ीद की बैअत से इन्कार भी इस्लाम की तफ़सीर ही था।

इस्लाम के दो माने हैंः एक ख़ुदा के सामने सर झुकाना दूसरे अपने को अल्लाह के बिल्कुल हवाले कर देना। अब जो ख़ुदा के सामने सर झुका चुका है वह यज़ीद ऐसे शख़्स के सामने सर कहाँ झुका सकता है और जो अपने को अल्लाह के हवाले किये हुए है वह यज़ीद की बैअत किस तरह कर सकता है?

इस्लाम का खुसूसी पैग़ाम अल्लाह के बन्दों को तौहीद का पैग़ाम था। कलम-ए-***ला-इला-ह इल लल्लाह*** का ज़बान ही से नहीं बल्कि अपने पूरे वजूद से इज़हार और एलान ही इस्लाम की हक़ीक़त है। यह ***ला-इला-ह इल लल्लाह*** का पैग़ाम सिर्फ़ उन लात और होबल पर तीर नहीं चलाता जो पत्थरों से बने काबे के ताक़ में लगे थे। बल्कि यह पैग़ाम हर शैतान के जलाल और घमण्ड को चूर कर देने का एलान है और हर उस शख़्स की हुकूमत को ख़त्म कर देने वाला है जो अल्लाह के मुक़ाबले में अपने सामने अल्लाह के बन्दों को झुकाना चाहता हो। यज़ीद अपने वक़्त में एक ऐसा ही शैतान था जो हक़ के मुजस्समे हुसैन[अ०] से बैअत चाहता था और यह हुसैन[अ०] का कलमा-ए-***ला-इला-ह इल लल्लाह*** के

तक़ाज़ों पर सख़्ती से अटल रहना था जो उन्होंने यज़ीद की बैअत से इन्कार किया इसी लिये तो ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को कहना पड़ाः

शाह अस्त हुसैन[अ०] बादशाह अस्त हुसैन[अ०]
दीन अस्त हुसैन[अ०] दीं पनाह अस्त हुसैन[अ०]
सर दाद, नदाद दस्त दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा कि बिनाए ला इलाह अस्त हुसैन[अ०]

और डॉक्टर इक़बाल ने कहाः

बहरे हक़ दर ख़ाक व ख़ून ग़लतीदा अस्त
पस बिनाए ला इलह गरदीदा अस्त

कर्बला में हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने इस्लाम की राह में जो बेमिसाल क़ुर्बानी पेश की वह अलग होने के साथ-साथ दुनिया की तारीख़ में बेमिसाल है इसलिए कि हक़ के रास्ते में हमेशा जो क़ुर्बानियाँ पेश होती रहीं वह आम तौर से शख़्सी और इन्फ़रादी थीं मगर यह कर्बला की क़ुर्बानी ही की ख़ास बात थी इसमें इमाम आली मक़ाम ने अपने भाईयों, भतीजों, भांजों यहाँ तक कि अपने कड़ियल जवान अली अक्बर[अ०] और अपने दूध पीते अली असग़र[अ०] हर एक को अपनी आँखों के सामने बल्कि अपने हाथ से ख़ुदा के रास्ते में क़ुर्बान किया और इस से बढ़कर अपने घर वालों की क़ैद तक क़ुबूल कर ली और इस तरह साबित कर दिया कि इस्लाम से कोई चीज़ महबूब नहीं है।

फिर यह कि इस मुसीबत की हंगामें और परेशानी और सख़्त तूफ़ान व ज़ुल्मों की माहौल में इस्लामी शरीअत को भी बचाये रखा और ऐसी नाज़ुक घड़ी में उनकी मिसाल पेश की जिन इन्सान के तो होश और हवास भी ठीक नहीं रह सकते।

एक तरफ़ ख़ालिक़ की नमाज़ जमाअत से अदा की उस वक़्त जब तीरों की बारिश हो रही थी मगर दो जांबाज़ सईद बिन अब्दुल्लाहे हनफ़ी और ज़ुहैरे क़ैन सामने खड़े कर दिये कि वह तीरों को अपने ऊपर रोकें। इधर इमाम[अ०] ने सलाम फेरा और उधर सईद ज़ख़्मों से चूर ज़मीन पर गिरे और इमामे से पूछा ऐ मौला! मैंने हक़ अदा कर दिया है?" इमाम ने फ़रमााया: "हाँ-हाँ तुमने वफ़ादारी का हक़ अदा कर दिया अल्लाह तुम्हें अच्छा बदला अता करे।"

दूसरी तरफ़ बन्दों के हुक़ूक़ जिनकी इस्लाम में बड़ी अहमियत है, उन्हें भी सख़्त से सख़्त वक़्त में हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने अदा किया। कर्बला के रास्ते में हुर की फ़ौज को पानी पिलाना क्या था? ———हालांकि वह दुश्मनों की फ़ौज थी मगर चूँकि प्यासी थी रहमतुल लिल आलमीन के जानशीन से देखा न गया, हालांकि अपने साथ औरतें और बच्चे भी थे और अरब के बेआबोग्याह रेगिस्तान का मुस्तक़बिल आगे था मगर आपने अपने साथ का जितना पानी था वह उस फ़ौज को पिलवा दिया यहाँ तक कि उनके घोड़ों तक की की प्यास बुझा दी।

आशूर के दिन जब जंग का बाज़ार गर्म था तीन दिन की भूख प्यास थी और अरब के रेगिस्तान की धूप सर पर थी, उस वक़्त अपने साथ वालों के साथ वह बराबरी का सुलूक कि ख़ेमे से जंग के मैदान में हर एक साथी के घोड़े से गिरने पर इमाम[अ०] सरहाने पहुँचते थे और लाश उठवाकर ख़ेमे की तरफ ले जाते थे।

वह इस्लामी बराबरी की अनोखी मिसाल जिसमें ग़ुलामों तक से अज़ीज़ों का सुलूक किया जाता है कर्बला में अपनी पूरी शान के साथ पेश की गई वाज़ेह ग़ुलामे तुर्की और जौन ग़ुलाम हबशी के साथ उस सुलूक से जो इमाम ने किया बल्कि ग़ुलाम के साथ जो सुलूक किया वह दूसरे साथियों और रिश्तेदारों के साथ न किया कि जब वह ज़ख़्मी होकर गिरा और उसकी आवाज़ पर इमाम तशरीफ़ ले गये तो आप उसके सरहाने बैठ गये और अपना पाक और मुक़द्दस चेहरा उसके चेहरे पर रख दिया और उसी तरह रहने दिया यहाँ तक कि उसी हाल में उसकी रूह निकली और इस बराबरी को इससे भी ज़्यादा सख़्त मौक़े पर उस वक़्त निबाहा जब साथियों की शहादत के बाद बल्कि रिश्तेदारों के दाग़ उठाने के बाद बल्कि उस वक़्त जब अली अकबर[अ०] को दम तोड़ते देख चुके थे, जब अब्बास[अ०] की मौत कमर तोड़ चुकी थी बल्कि उस हाल में जब अभी-अभी अपनी तलवार से क़ब्र खोद कर अपने हाथों से छः महीने के दूध पीते अली असग़र[अ०] को दफ़्न कर चुके थे। उस वक़्त जब रुख़सते आख़िर के लिए ख़ेमे के दरवाज़े पर आए और बुलन्द आवाज़ से कहाः *"अस्सलामु अलैइक या ज़ैनब अस्सलामु अलैइक या उम्मे कुल्सूम अस्सलामु अलैइक या लैला व रबाब अस्सलामु अलैइक या सकीना व रुक़ैय्या व इन्नल बनून"* बीबियों और बेटियों के सलाम के साथ-साथ यह भी कहा कि *"अस्सलामु अलैइक या फ़िज़्ज़ता ज़ारियता उम्मी फ़तिमतज़्ज़हरा"* सलाम हो फ़िज़्ज़ा पर जो मेरी माँ

फ़ातिमा ज़हरा^{स०} की कनीज़ है।"

इस तरह हुसैनी किरदार में इस्लामी तालीमात इस तरह जुड़ गये हैं कि हुसैनी यादगार के साथ-साथ मुसलमानों को इस्लामी तालीमात की याद भी ताज़ा होती रहती है।

इस तरह हुसैन[अ०] और इस्लाम दोनों ही एक साथ ज़िन्दा हैं और हमेशा ज़िन्दा रहेंगे।

फ़लसफ़-ए-शहादत

सैय्यिदुल उलमा[ता०स०] की यह तक़रीर रेडियो स्टेशन देहली से 1377[हि०] में प्रसारित हुई।

शहादत के माने हैं गवाही और गवाही का मतलब है "हक़ साबित करना" और इस्बात की ज़रूरत उसी हक़ीक़त के लिए होती है जो आँखों से ओझल हो इसलिए जितनी कोई हक़ीक़त अज़ीम हो और जितनी ज़्यादा आँखों से नज़र आती हो उतनी ही शानदार गवाही की उसे ज़रूरत होगी और सबसे शानदार गवाही वह गवाही है जो अपने ख़ून की मुहर लगाकर अदा की जाए और सबसे ज़्यादा मख़्फ़ी हक़ीक़ते अज़ली और ज़ाते रब्बानी है इसीलिए उस जान की कुर्बानी को जो ख़ुदा के रास्ते में जेहाद करके पेश की जाए इस्लाम में "शहादत" कहा जाता है।

हक़ और बातिल में जंग हमेशा से क़ायम रही है। बातिल के मुहररिकात उमूमन आलमे मुशाहेदात के माद्दी अस्बाब होते हैं। कोई हुस्ने नज़र फ़रेब, कोई शमशीरे ज़ुहरा गुदाज़, कोई ताज और तख़्त, कोई सरवत और दौलत, कोई जाहो हशम या कोई नमरूद, कोई फ़िरऔन और कोई यज़ीद— इनकी तहरीक की पूरी ताक़त एहसासात पर छाकर दिल को मुतास्सिर करने में मुज़मर है इसके बरख़िलाफ़ हक़ अपने लिए न कोई दिल फ़रेब सूरत रखता है जो जन्नत निगाह बन सके। न सदाए सामिआ नवाज़ जो फ़िरदौसे गोश हो, न यहाँ कोई गंज शाएगान होता है जो नज़र को लुभाए, न कोई तेग़े बर्रान जो दिल को दहलाए, कोई ज़र व गौहर, न कोई लाओ लश्कर, इसकी कशिश तो सिर्फ़ एक ग़ैबी ताक़त के एहसास पर मबनी है जो नज़र से बिल्कुल मख़्फ़ी है मगर हक़ परस्त अफ़राद उस हक़ के मुक़ाबले में हर तरह के नक़द फ़ायदा और हाज़िर मफ़ाद को ठुकराकर उस हक़ की ताक़त का सुबूत देते रहे।

अगर हम इस्तेलाहात की उलझनों में न पडें और सिर्फ़ हक़ीक़त पर नज़र रखें तो हर वह तकलीफ़ जो हक़ की राह में कभी उठाई गई हो एक दर्जे की शहादत है जो उस हक़ के लिए पेश की गई और इस तरह मर्दाने राहे ख़ुदा की हर साँस जो वह आलाम व मसाएब को उठाये हुए लेते हैं एक शहादत है इस लेहाज़ से शहादत के बेशुमार दर्जे होते हैं जिनमे अहमियत व अज़मत कभी कुर्बानियों की शिद्दत व कसरत के साथ पैदा होगी और कभी इस लेहाज़ से बातिल के कितने ताक़तवर मुहर्ररकात के मुक़ाबले में पेश हुई है और कभी अपने दूररस नतीजों के एतेबार से।

मिसाल के तौर पर हज़रत मूसा[अ०] का फ़िरऔन के महल के राहत और आराम को छोड़कर वीरानी की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए निकल खड़ा होना भी शहादते हक़ के फ़रीजे का अदा करना था मगर हज़रत इब्राहीम[अ०] का हक़ परस्ती के लिए आग के भड़कते हुए शोलों में फेंक दिये जाने पर साबित क़दम रहना इससे बड़ी शहादत का नमूना है।

फिर अगर अपने से भी ज़्यादा इन्सान को औलाद अज़ीज़ होती है तो मानना पड़ेगा कि जनाबे इस्माईल को कुर्बानगाह में लाते वक़्त सिर्फ़ इस्माईल ही शहादत के लिए नहीं जा रहे थे बल्कि बाप भी अपने बेटे को उस ग़ैबी इशारे पर शहादतगाह में ले जाने और गले पर छुरी चलाने की वजह से हक़ की बारगाह में एक अज़ीम शहादत पेश कर रहा था।

अब इस मेयार पर हज़रत सैय्यिदुश्शोहदा इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शहादत को देखिये तो यक़ीन मानना पड़ेगा कि यह एक मजमुआ थी उन तमाम शहादतों का जो अज़ल से कभी भी राहे ख़ुदा में पेश की गई हों।

अब उसके फ़लसफ़े के लिए किसी मज़ीद तलाश की ज़रूरत नहीं है। जो भी कभी किसी शहादत का फ़लसफ़ा रहा है वह उस शहादत का फ़लसफ़ा भी था।

जिसके लिए ज़करिया ने आरे से चीरा जाना मन्ज़ूर किया, जिस लिए जरजीस तेल के कढ़ाव में डाल कर उबाल डाले गये, जिस लिए यह्या का सर क़लम हुआ, जिस लिए हज़रत मूसा भी तरह-तरह की सख़्तियाँ झेले,

जिस लिए हज़रत ईसा ने यहूद के हाथों तरह-तरह की तकलीफ़ें उठायीं और आख़िर में जिसके लिए पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद[स॰] ने तेरह बरस तक अपने मुबारक जिस्म पर पत्थर खाये। फिर जिस लिए अब्दा बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब ने ज़ख़्मी होकर दम तोड़ा। हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब का जिगर चाक हुआ, जाफ़रे तैयार के हाथ क़लम हुए। ग़रज़ बद्र और उहद और दूसरी जंगों में कितने शहीद ख़ाक और ख़ून में लोटे। बस इसी लिए आज फ़र्ज़न्दे रसूलुस्सक़लैन हज़रत इमाम हुसैन[अ॰] क़ुर्बानी के मैदान में गामज़न हुए।

शहादत की हक़ीक़त एक ही है मगर,

नवा रा तल्ख़ तरमी ज़न चू ज़ौक़े नग़मा कमयाबी

जितने हक़ पर पर्दे गहरे पड़ गये हों उतना शहादत हक़ की आवाज़ को बलन्द तर होना चाहिए और जितने बातिल की तरफ ले जाने वाले माद्दी अस्बाब ज़्यादा जमा हों उतनी ही ग़ैबी हक़ की शहादत ताक़तवर होने की ज़रूरत पड़ेगी।

इसके पहले जितने अम्बिया[अ॰] और मुस्लेहीन[अ॰] ने क़ुर्बानियाँ पेश की थीं वह ऐसे अफ़राद के मुक़ाबले में जो हक़ के खुले हुए मुख़ालिफ़ थे जैसे मूसा[अ॰] के मुक़ाबले में फ़िरऔन और हज़रत इब्राहीम[अ॰] के मुक़ाबले में नमरूद जो खुल्लम खुल्ला अपनी ख़ुदाई का एलान कर रहा था या हज़रत मुहम्मद[स॰] के मुक़ाबले में अबूजहल व अबू लहब जो एलानिया तौहीद (ख़ुदा के एक होने) का इन्कार करने वाले और बुतपरस्ती के अलमबरदार थे मगर हज़रत इमाम हुसैन[अ॰] को जिस जमाअत के मुक़ाबले क़ुर्बानी पेश करना थी वह ऐसी जमाअत थी जो बज़ाहिर उस रास्ते पर चलने वाली थी जिसके हज़रत हुसैन[अ॰] रहबर थे। वह एलानिया इस्लाम से इन्हेराफ़ का इज़हार नहीं कर रही थी। वह उन्हीं पैग़म्बरे इस्लाम का कलमा पढ़ रही थी जिसके हुसैन[अ॰] वारिस थे और यज़ीद उसी इस्लाम के नाम पर हुकूमत कर रहा था जिसकी हिफ़ाज़त इमाम हुसैन[अ॰] के सामने थी। इसी लिए हज़रत इमाम हुसैन[अ॰] की मुहिम बहुत मुश्किल तर हो गई थी।

अगर कोई ग़ैर शआएरे इस्लामिया को कुछ भी सदमा पहुँचाता है तो मुसलमान बहुत जल्दी बेदार हो जाते और जोश में आ जाते हैं लेकिन जब इस्लाम की नक़ाब चेहरे पर डालकर शरीअते इस्लाम को नुक़सान पहुँचाया जाये तो मुसलमानों की आँख ज़रा मुश्किल से खुलती है।

इमाम हुसैन[अ॰] के सामने यही सूरते हाल थी। यज़ीद तख़्ते इस्लाम पर ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन बना हुआ बैठा था। यक़ीनन पैग़म्बरे ख़ुदा के बाद मुसलमानों के सामने अगर फौरन यज़ीदी मुजस्समा आ जाता तो भी वह बहुत जल्द चौंक पड़ते मगर यह मन्ज़िल रसूले इस्लाम के बाद पचास बरस में तदरीजी तौर पर आयी थी। इस तरह मुसलमानों के एहसासात पर बेहोशी छा गई थी और एक ग़शी का आलम तारी हो गया था।

अगर यज़ीद हज़रत इमाम हुसैन[अ॰] से कुछ एतेराज़ न करता यानी बैअत का मुतालबा न करता तो बहैसियते जानशीने रसूल[स॰] हज़रत इमाम हुसैन[अ॰] शरीअते इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिए किस वक़्त में क्या करते? वह हम इस वक़्त नहीं बता सकते और इसका समझना मुश्किल है मगर अब सूरते हाल तो यह पैदा हुई कि यज़ीद ने आपकी ख़ामोशी और गोशानशीनी पर बस नहीं किया बल्कि वह आपसे बैअत चाहने लगा यानी यह चाहा कि आप उसके नाजाएज़ कामों पर हक़ की मुहर लगा दें और उसके सही जानशीने रसूल[स॰] होने का इक़रार कर लें। इसका मतलब यह था कि मूसा[अ॰] फिरऔन की ख़ुदाई मान लें, इब्राहीम[अ॰] नमरूद की उलूहियत को क़ुबूल कर लें और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स॰] न सिर्फ़ इतना कि बुतों की बुराई छोड़ दें बल्कि ख़ुद भी (अल्लाह की पनाह) बुत परस्ती में अबुजहल व अबूलहब के साथी हो जाएं। इसे हक़ का मानने वाला और ख़ुदा का नुमाइन्दा कैसे गवारा कर सकता था?

अब वक़्त था कि आप माद्दी जाहो हशम के मुक़ाबले में हक़ की शहादत पेश करें। यह मन्ज़िल उसी वक़्त से शुरु हो गई जब आपने वलीद के बैअत के मुतालबे का इन्कार करते हुए रसूल[स॰] के शहर से जुदाई क़ुबूल की और वतन छोड़ दिया। बस अब आप शहादत के रास्ते पर थे और हर क़दम जो उठ रहा था वह शहादत के रास्ते का एक पत्थर था।

मक्क-ए-मुअज़्ज़मा में पनाह न मिलने पर हज के इरादे को छोड़कर इराक़ के इरादे से निकल खड़ा होना, यह इस शहादत का दूसरा बाब था और कर्बला पहुँच कर जब फ़ौजों की भीड़ हो गई और तीस हज़ार का लश्कर सामने सफ आरा हो गया तो इस्तेलाही तौर पर हुसैन[अ॰] की शहादत दसवीं मुहर्रम को अस्र के वक़्त हुई

मगर हक़ीक़त में देखिये तो छोटे-छोटे बच्चों की सूरतें आँखों के सामने, ज़ैनब[अ॰] और कुलसूम[अ॰] के बुर्के और चादर का ख़याल ज़हन में, और दुश्मनों के वहशियाना मज़ालिम का तसव्वुर दिमाग़ में, और इन सब के होते हुए भी फ़ासिक़ की बैअत से अलग रहने का पक्का इरादा दिल में, वह एक मुस्तक़िल और मुसलसल शहादत थी जिसे हुसैन[अ॰] अपनी हर साँस और हर जुम्बिशे नज़र के साथ अपनी ज़िन्दगी के हर हर लम्हे में अदा कर रहे थे।

और सातवीं मुहर्रम से पानी बन्द हो जाने के बाद छोटे-छोटे बच्चों के मुँह से निकलती हुई अलअतश की सदाओं को सुनते हुए, सकीना के ख़ुश्क होंठ और अली असग़र की जाँबलब हालत देखते हुए, इन्कारे बैअत पर क़ायम रहना वह बेपनाह शहादत थी जो हक़ को हक़ साबित कर देने की ज़मानतदार बन रही थी।

फिर आशूर के दिन उन्होंने अपनी इस्तेलाही शहादत से पहले कम से कम बहत्तर शहादतें अपने हाथों से पेश कीं जैसे हक़ की दस्तावेज़ पर ख़ून की बहत्तर मुहरें लगा दीं जिनमें क़ासिम[अ॰] के बचपन, अली अकबर[अ॰] के शबाबे मुहम्मदी और अबुलफ़ज़्ल की शुजाअते हैदरी की शहादत क्या कम थी कि आख़िर में छः महीने की जान अली असग़र[अ॰] ने जो हर मज़हब की ज़बान में मासूम थे बाप के हाथों पर दम तोड़कर हक़ की ला ज़वाल ताक़त की अबदी तस्दीक़ की और जब ये शहादत भी हुसैन[अ॰] पेश कर चुके तो शरीअते इस्लाम के क़ानून के मुताबिक़ ख़ुदा के रास्ते में जेहाद के फ़रीज़े को शानदार तरीक़े पर अदा करके अस्र के वक़्त सजद-ए-ख़ालिक़ में क़ातिल के ख़ंजर के हाथों हुसैन[अ॰] ने अपनी जान भी ख़ुदा के रास्ते में निसार कर दी और इस तरह ये बेनज़ीर शहादत उस बेमिसाल मेयार पर पेश हुई कि जब तक हुसैन[अ॰] की क़ुर्बानी की याद क़ायम है और वह हमेशा रहेगी उस वक़्त तक हक़ नुमायाँ है और वह हमेशा नुमायाँ रहेगा।

बक़ौल ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ः

सरदाद नदाद दस्त दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा कि बिनाए ला इलाह अस्त हुसैन[अ॰]



(बक़िया.... हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स॰] एक..........)

को आने वाली नसलों के सामने नमूने के तौर पर सामने आएं। जबकि दूसरे मज़हबों में एक मज़हबी पेश्वा को उलूहियत का दर्जा देते है, जिसकी वजह से उसकी ज़ात उसके मज़हब के मानने वालों के लिए नमूना नहीं बन सकती। इसके उलट पैग़म्बरे इस्लाम[स॰] की ज़ात तमाम इन्क़ेलाबी मुसलमानों के लिये क़यामत तक के लिए एक अमली नमूना है। दुनिया के किसी हिस्से और किसी ज़माने में इस्लामी इन्क़ेलाब में कोई ऐसा मौक़ा नहीं है जिसके लिए पैग़म्बरे इस्लाम की ज़िन्दगी नमूना न हो।

पैग़म्बरे इस्लाम[स॰] की तबलीग़ में रुकावट पैदा करने वाले

1- तहरीफ़ करने वाले (ईसाई और यहूदी जिन्होंने आसमानी किताबों में अपनी मर्ज़ी से बदलाव किये)

2- फ़िक्री और अख़्लाक़ी माद्दा परस्त (ज़्यादातर क़ुरैश के मुश्रिक इसी गिरोह से थे जो नफ़्सपरस्त और पेट के पुजारी थे)

3- मक्का और मदीने के सियासी लोग, हुकूमत और इक़्तेदार वाले क़ौम परस्त लोग थे।

4- मक्के और मदीने के सियासी लोग, क़ौम परस्त और ताक़तवर लोग (अबूसुफ़यान, अबूजहल और अबूलहब क़ुरैश की क़ौम परस्ती के नुमाइन्दे और अब्दुल्लाह इब्ने उबइ, मदीने की क़ौम परस्ती का नुमाइन्दा) हैरह, असान, ईरान व रूम से मुताल्लिक़ लोग (उस ज़माने की बड़ी ताक़तें और उनके काम करने वाले), सियासी ताक़तें, इक़्तेसादी ताक़तें, काबा के मुतवल्ली और दरबारी मज़हब की रस्मी ताक़त। पैग़म्बरे इस्लाम[स॰] ने इन सबके बारे में इस्लाम की सोच को साफ़ कर दिया। 14 सौ सालों बाद इस्लामी इन्क़ेलाब भी उन्हीं मोर्चों से दोचार हुआ। इस तरह पैग़म्बरे इस्लाम[स॰] हर ज़माने में मुसलमानों के लिए जीता जागता अमली नमूना हैं। ❁❁❁

सुन्नते रसूल और इल्म

मौलाना सै० नसीर हुसैन साहब नक़वी साहब क़िब्ला

जब हम सरवरे रिसालत अरवाहुना लहुल फ़िदा की अमली ज़िन्दगी पर नज़र डालते हैं तो क़दम-क़दम पर हमें ऐसे आसार नज़र आते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इल्म की तरवीज और इशाअत में ग़ैर मामूली सरगर्मी दिखाई है ऐसी क़ौम जो उलूम की मुबादियात नविश्त व ख़्वान्द से भी महरूम थी। उनके सामने उलूम और मआरिफ़ के दरया बहा के रख दिये हैं और इसका असर यह हुआ कि जाहिल और गंवार अरब उलूम से इस हद तक बाख़बर हो गये कि ईरान और रोम की तहज़ीबें उनके सामने मांद पड़ गईं और इस्लामी मदारिस और इल्मी मराकिज़ इस हद तक तरक़्क़ी कर गये कि दुनिया भर के तश्नगाने उलूम इन्हीं मराकिज़ के इल्मी फ़ायदों से अपनी प्यास बुझाने लगे हज़रत रसूले अकरम[स०] ने अपनी मुक़द्दस तालीमात से इन्सानियत को उलूम के हासिल करने के रास्ते पर लगा दिया और हर मुसलमान के लिये लाज़िम कर दिया कि वह इल्म हासिल करे इसलिए हुज़ूर[स०] ने अपने गराँक़द्र इरशाद ''तलबुल इल्मि फ़रीज़तुन अ़ला कुल्लि मुस्लिमिन'' में इसके वुजूब पर मुहर लगा दी, आम ज़हनों में यह बात उतरवा दी कि इन्सानियत के अहम तरीन फ़राएज़ में इल्म हासिल करने का वह दरजा है जो इन्सानी जिस्म में रूह को हासिल है किसी को भी इससे अलग क़रार नहीं दिया जा सकता, इस्लाम ने समाज के हर शख़्स के लिये लाज़िम कर दिया कि वह इल्म हासिल करे इसमें ग़रीब और अमीर की भी कोई क़ैद नहीं, अमीर अपने माली वसाएल से फ़ायदा उठाकर उस दौलत से फ़ायदा उठा सकता है तो ग़रीब की ग़रीबी और लाचारी उसे इल्म से नहीं रोक सकती। फिर मज़े की बात ये है कि उसके लिए ज़माना, उम्र और वक़्त की क़ैद भी उठा दी। फ़रमायाः ''उत्लुबुल इल्मा मिनल महूदि इलल लहूदि'' झूले से इल्म की शुरुआत होती है और क़ब्र के क़रीब पहुँचने तक उसका साथ रहता है ज़िन्दगी का कोई लम्हा भी तो ऐसा नहीं जिसमें इल्म हासिल करना वाजिब न रहता हो, हर लम्हा, हर वक़्त एक दीनदार मोमिन और मुस्लिम का फ़र्ज़ है कि वह अपनी इल्मी इस्तेदाद को बढ़ाते हैं इतना ग़ौर और फ़िक्र जो फ़र्ज़ की अदायगी से मेल खाता हो। क्या मिल्लत के लोग इसकी तरफ ध्यान देंगे। फिर इलाक़ाई हदों में भी वुस्अत पैदा कर दी कि जहाँ भी तुम्हें इल्म नज़र आ जाए चाहे दुनिया के दूर-दराज़ हिस्सों का सफ़र करना पड़े, हिम्मत के क़दमों में सुस्ती व काहिली न आने पाये। ''उत्लुबुल इल्मा वलौ कान बिस्सीन'' इल्म हासिल करो चाहे तुम्हें चीन ही जाना पड़े। क़दम-क़दम पर हुज़ूर ने इस अहम इन्सानी फ़रीज़े की अहमियत बतायी है। इल्म की इफ़ादियत और अहले इल्म की क़द्रो मन्ज़िलत से आगाह फरमाया है। चुनानचे एक मक़ाम पर अहले इल्मो फ़ज़्ल को अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का वारिस क़रार दिया है। इरशाद होता है: ''अल-उलमाउ वरसतुल अम्बिया'' अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का मिशन भी इशाअते उलूम था, उनके पेशे नज़र भी इन्सानी जेहालत की तारीकियों के पर्दों को नूरे इल्म से चाक करना था, उलमा उनके इल्म के अमानतदार होते हैं। यह इल्मी मीरास उनको पहुँचती है, बेशक यह सआदत जहाँ उनकी बड़ी अज़मत बढ़ा देती है उनकी ज़िम्मेदारियों में भी बड़ा इज़ाफ़ा हो जाता है और तब वह सही मानों में ख़ाज़िन और अमीन हो सकते हैं कि विरासत के हक़ को ठीक-ठीक काम में लायें। इन्सानी नस्ल में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम से बढ़कर तो कोई क़िस्म है नहीं और उलमा का उनका वारिस होना उनकी इज़्ज़त पर दलील है और यह इज़्ज़त इल्म की एहसानमन्द है, दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ समझें कि हक़ीक़त में यह इल्म और हिकमत ही की इज़्ज़त है और उसी की अज़मत है। हुज़ूर के इस पाक इरशाद का मतलब यह

हुआ कि इन्सानियत की मेराज बस इल्म ही है। इल्म ही से इन्सानियत अपने कमाल तक पहुँचती है और इसी की फ़रोज़ाँ क़िन्दील से ये ज़ुल्मतकदा रौशन हो सकता है।

हुज़ूरे अक़दस (रूही लहुल फ़िदा) अपनी एक और हदीस में यूँ इरशाद फ़रमाते हैंः ख़ुदावन्दा! —मेरे ख़ुलफ़ा पर रहम कर—! कुछ ने अर्ज़ किया, हुज़ूर[स०] आपके वह ख़ुलफ़ा कौन हैं? इरशाद हुआः —"मेरे ख़ुलफ़ा वह लोग है जो मेरी तालीमात और अहादीस और सुन्नतों को फैलायेंगे और लोगों तक मेरे उलूम पहुँचायेंगे—" इस हदीस में भी अहले इल्म और दानिश की शान और मानवी अज़मत की तरफ़ लतीफ इशारे हैं, और इल्म की क़द्रो क़ीमत का पता चलता है। इन्सानियत के आख़िरी पैग़म्बर की नयाबत व ख़िलाफ़त की बुलन्दियों को ज़रा सामने रखिये, इसके ज़िम्न में इल्म की जो अज़मते इस्तेम्बात होती है उसका अन्दाज़ा फ़रमाइये— ज़रा उन ख़ुलफ़ा को पहचानते चलें। कौन हैं जो रसूल[स०] के उलूम के ख़ाज़िन और वरसादार, आदाब और सुन्नते नबवी के अमीन हैं। "अना मदीनतुल इल्मे व अलिय्युन बाबुहा" इनको पहचानने के लिए काफ़ी है। हज़रत अमीरुल मोमिनीन का इरशाद हैः "मुझे रसूले ख़ुदा[स०] ने इस तरह इल्म सिखाया है जिस तरह कबूतर अपने बच्चे को दाना खिलाता है"— इसी से इनको पहचान लीजिये। कहीं ऐसा न हो कि हर चमकदार चीज़ को देखकर सोना समझ लें। यह अहलेबैते सलवातुल्लाहि अलैहिम अजमईन का मन्सब है। और जिनकी नूरानी क़िन्दीलें उलूमे नुबुव्वत की मश्अल से फ़रोज़ाँ हुई हैं। सुन्नते रसूल[स०] के ये मुकम्मल नमूने थे उन्हीं के दम से पैग़म्बर[स०] की अहादीस व तालीमाते फैली और यही हैं वह हक़ीक़ी ख़ुलफ़ा (सलवातुल्लाहि अलैइहिम अजमईन)।

हज़रत अबुज़र ग़फ़्फ़ारी रहमतुल्लाह अलैह— इस्लाम की एक नामवर शख़्सियत हैं, रसूल[स०] के सहाबियों में उनको एक ख़ास अज़मत है बारगाहे नबवी में क़ुरबत व बारयाबी हासिल है, उन बुज़ुर्ग सहाबियों में हैं जिनकी जन्नत मुश्ताक़ है। नबी[स०] की हदीसों से उनकी जलालते क़द्र का अन्दाज़ा होता है। हुज़ूर सरकारे रिसालत[स०] ने अबुज़र[रज़ि०] ही को मुख़ातब फ़रमा कर एक अज़ीम हदीस में इल्म के फ़ज़ाएल बयान फरमाये हैं, जो चश्मे बसीरत के लिए नूर हैं। इल्म की अहमियत और अफ़ादियत, उसकी अज़मत और फ़ौक़ियत का इससे पूरा-पूरा अन्दाज़ा होता हैः हुज़ूर फ़रमाते हैं ऐ अबुज़र[रज़ि०]—! **एक घड़ी ऐसी मजलिस में बैठना जहाँ इल्मी गुफ़्तगू हो रही हो बेहतर है और अल्लाह तआला को ज़्यादा महबूब है, हज़ारों रातों की शब ज़िन्दादारी है और रातें भी कैसी कि हर रात में हज़ार-हज़ार रकात नमाज़ अदा की गई हो**— और यह हज़ार दफ़ा ख़ुदा के रास्ते में जेहाद करने से बेहतर है— और बारह हज़ार ख़त्मे क़ुर्आन करने से पसन्दीदातर— एक साल की इबादात से बढ़कर इस हाल में कि उसके दिनों में इन्सान रोज़ेदार रहा हो। और उसकी रातों को इबादत में ज़िन्दा रखा हो। ऐ अबूज़र[रज़ि०]! जो शख़्स अपने घर से किसी इल्मी मसले के अख़्ज़ का क़स्द व इरादा लेकर निकलता है या इल्म हासिल करने के लिए वतन से दूर होने वाला रास्ता चुनता है हर क़दम जो वह उठाता है उसे एक पैग़म्बर का सवाब मिलता है। और बद्र के शोहदा ऐसे हज़ार शोहदा जैसा बदला। हर हर्फ़ जो किसी आलिम से सुनता है लेता है और लिखता है, इसके बदले में इसे जन्नत में एक शहर अता किया जाता है। एक तालिबे इल्म की इससे बढ़कर क्या सआदत होगी कि ख़ुदावन्दे आलम उसको दोस्त रखता है। फ़रिश्ते और अम्बिया उससे मुहब्बत करते हैं, नहीं बल्कि हर नेक और भला इन्सान उससे मुहब्बत और उलफ़त रखता है। क्या कहना इल्म हासिल करने वालों का। आलिम के चेहरे पर नज़र करना, हज़ारों ग़ुलामों को आज़ाद करने से बेहतर है इल्म दोस्त के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। एक तालिबेइल्म और इल्म का दोस्त सुबह और शाम ऐसी हालत में करता है कि ख़ालिक़ की रज़ा इस पर मुहीत है। वह दुनिया को नहीं छोड़ता, मगर यह कि उसे शराबे कौसर से सैराब किया जाता है और उसे जन्नत के मीठे और मज़ेदार फल खिलाये जाते हैं। मरने के बाद क़ब्र में बिच्छू उसे काट नहीं खाते, उसकी लाश ज़मीन के कीड़ो मकोड़ो का खाना नहीं बनती, फिर जन्नत में वह होगा और हज़रत ख़िज़्र[अ०] की मुसाहेबत और रिफ़ाक़त—"

इस हदीस पर ग़ौर कीजिये और क़ुर्आने हकीम के लफ़्ज़ "ख़ैरे कसीर" को पेशे नज़र रखिये, आपको मालूम होगा कि वाक़ई तमाम ख़ूबियाँ इसी के तहत पैदा होती हैं। और सब नेकियों की असल यही इल्म है। ❁❁❁

किरदारे हुसैनी का पैरोकार मुन्तज़िर ज़ैदी

तज़हीब नगरौरी, लखनऊ

ज़ालिम कितने ही ताक़तवर क्यों न हों कितनी ही ज़्यादा तादाद में क्यों न हों, दुनिया कितनी ही मुसीबतों और परेशानियों का ठिकाना क्यों न बन गयी हो, फ़िज़ा कितनी ही ख़राब क्यों न हो निशानियाँ कितना ही यह बता रही हों कि बस जल्द ही दुनिया से ज़ालिम और जाबिर हाकिमों की दरिन्दगी का निशाना बन कर सीधे-सादे और बेगुनाह लोग ख़त्म हो जाएंगे।

लेकिन अलहम्दुलिल्लाह हर ज़माने की तारीख़ गवाह है कि हर ज़माने में हर फिरऔन के लिये एक मूसा रहा ''है'' और इन्शाअल्लाह मुहम्मद[स०] व आले मुहम्मद[अ०] के सदक़े में रहेगा। अगर फिरऔन को उसकी 'ख़ुदाई' के साथ दरयाए नील में डुबो देने के लिए एक पैग़म्बर हज़रत मूसा[अ०] थे तो अबूजहल जैसे फ़िरऔन के ख़ात्मे के लिए शहरे इल्म रसूले अकरम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] अपने ख़ानदान के साथ सामने आए। और जब यह सिलसिला ज़रा आगे बढ़ा तो यज़ीद जैसे सबसे बड़े आतंकवादी और फ़िरऔन के लिए नवास-ए-रसूल[स०] हज़रत इमाम हुसैन[अ०] अपने रिश्तेदारों और क़रीबी लोगों के साथ खड़े हुए और यज़ीद और उसके आतंकवाद का ख़ात्मा किया। इसी तरह इस ज़माने के सबसे बड़े आतंकवादी, ज़ालिम और जाबिर जार्ज बुश को उसका असली चेहरा दिखाने के लिए 14 दिसम्बर 2008[ई०] को बग़दाद में बेबाक इराक़ी पत्रकार ने उसके मुँह पर यह कहते हुए अपना दस नम्बरी जूता मारा कि ''ले कुत्ते इराक़ी अवाम की तरफ से अलविदायी तोहफ़ा'' यक़ीनन इस जूते ने ''बुश'' को हुश करके उसका असली चेहरा दिखा दिया। शायद इतनी गहरी चोट तलवार और गोली के वार से न लगती जितनी गहरी चोट मुन्तज़िर ज़ैदी के जूते ने लगायी। गोली की मार को शायद सिर्फ़ देखने और सुनने वाले ही याद रखते लेकिन यह जूते की मार बुश को ज़िन्दगी भर तड़पाती रहेगी।

मुन्तज़िर ज़ैदी ने जब बुश को जूते मारे उसके बाद मुन्तज़िर ज़ैदी गिरफ़्तार हो गये लेकिन उनकी हिम्मते मर्दाना की तारीफ़ में सभी हक़ परस्तों की ज़बाने मसरूफ़ है यहाँ तक कि उनको ''Man of the Year'' का ख़िताब भी मिला और मिलना भी चाहिए।

मुन्तज़िर ज़ैदी ने जितनी हिम्मत का काम जितनी आसानी से किया उसकी जितनी तारीफ़ की जाय कम है यक़ीनन इतना बड़ा कारनामा सिर्फ़ और सिर्फ़ वही इन्सान कर सकता है जिसकी नज़रों ने मुहम्मद[स०] व आले मुहम्मद[अ०] की सीरत को ग़ौर से देखा या पढ़ा हो। ऐसे कारनामे की उम्मीद किसी मुनाफ़िक़ से करना बेकार है। हम ज़ैदी को इस कामयाब एहतेजाजी क़दम बढ़ाने पर मुबारकबाद पेश करते है और तमाम लोगों से ये अपील करते हैं कि गाँव-गाँव शहर-शहर और मुल्क-मुल्क मुन्तज़िर ज़ैदी को जल्दी आज़ाद कराने के लिए एहतेजाज करें साथ ही हर साल 14 दिसम्बर को इस ऐतिहासिक दिन की याद ''यौमे शुजाअते मुन्तज़िर ज़ैदी'' के उनवान से मनाएं ताकि दुनिया के दूसरे बुश जैसे लोग कम से कम यही सोच कर या डरकर कि कहीं हमारे साथ भी यही सुलूक न हो जाए अपने को सुधारने की कोशिश करें।

मिटा दो ज़ुल्म जहाँ भी कहीं नज़र आए
मेरे ख़याल में ये भी है इन्तेक़ामे हुसैन[अ०]

मुख्य समाचार

अमरीका हिक्मते अमली नही पॉलीसी बदले: डाक्टर अहमदी नेजाद

ईरान के राष्ट्रपति डॉक्टर महमूद अहमदी नेजाद ने कहा कि दुनिया मुज़ाकेरात के दौर में दाख़िल हो गई है और ईरान अपने पुराने दुश्मन अमरीका की तरफ़ से मुज़ाकेरात की पेशकश का ख़ैरमक़दम करेगा। अगर मुज़ाकेरात आपसी एहतेराम की बुनियाद पर हों तो ईरान मुज़ाकेरात के लिए तैयार है। महमूद अहमदी नेजाद ने यह बात तेहरान में आज़ादी स्क्वायर में इन्क़ेलाबे ईरानी की तीसवीं सालगिरह पर एक इज्तेमा से ख़िताब करते हुए की। इस इज्तेमा में इत्तेलाआत के मुताबिक़ कई लाख लोग शरीक हुए। महमूद अहमदी नेजाद ने कहा कि 'दुनिया मुज़ाकेरात के दौर में दाख़िल हो रही है।' उन्होंने इराक़ और अफ़ग़ानिस्तान पर अमरीका की फ़ौजकशी की तरफ नाम लिये बिना इशारा करते हुए कहा कि यह साबित हो चुका है कि फ़ौजी ताक़त का इस्तेमाल कामियाब नहीं हो सकता। तजज़िया निगारों के मुताबिक़ अमरीका से ताल्लुक़ात के हवाले से तेहरान से मिलने वाले इशारों में ये सबसे मुस्बत बयान है और इससे 30 साल से दोनो मुल्कों के दरमियान सीधे तौर पर मुज़ाकेरात की उम्मीद पैदा हो गई है। कुछ रोज़ पहले अमरीका के राष्ट्रपति बाराक ओबामा ने अपनी प्रेस कान्फ्रेंस में एक बार फिर ईरान से मुज़ाकेरात शुरु करने की ख़्वाहिश का इज़हार किया था। बाराक ओबामा ने कहा था कि अगर ईरान अपनी बन्द मुटठी खोलने के लिए तैयार हो जाए तो अमरीका ईरान की तरफ मुज़ाकेरात का हाथ बढ़ा सकता है। पिछले महीने ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद ने केरमान में एक अवामी इज्तेमाअ में कहा था कि अगर अमरीका अपने पिछले जुर्मों पर माफी माँगने के लिए तैयार हो जाए तो ईरान उस से मुज़ाकेरात कर सकता है। महमूद अहमदी नेजाद के इस बयान के बाद आलमी सतह पर यह असर हुआ कि मुस्तक़बिले क़रीब में ईरान और अमरीका में सीधे तौर पर बातचीत मुमकिन नहीं है। राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद ने जिन्हें एक सख़्त रहनुमा समझा जाता है अपने ख़िताब में इन बातों की निशानदही की जिन पर ईरान अमरीका से मुमकिन तौर पर बातचीत कर सकता है। उन्होंने कहा कि दहशतगर्दी और जौहरी हथियारों का ख़ात्मा, संयुक्त राष्ट्र की सलामती कोन्सिल के ढाँचे में तबदीली और नशाआवर चीज़ों की तस्करी को रोकना अमरीका से बातचीत के मुमकिन मौज़ू हो सकते हैं। महमूद अहमदी नेजाद ने कहा कि अगर आप वाक़ई दहशतगर्दी से निमटना चाहते हैं तो आइये ईरान के साथ आइये जो दहशतगर्दी का सबसे ज़्यादा शिकार रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि अगर आप जौहरी हथियारों के बारे में कुछ करना चाहते हैं तो आपको ईरान के साथ खड़ा होना पड़ेगा जो आपको सही रास्ता दिखा सकता है। ईरान और अमरीका के बीच सिफ़ारती ताल्लुक़ात ईरान के इन्क़ेलाब के बाद उस वक़्त रुक गये थे जब तेहरान में युनिवर्सिटी के तालिबेइल्मों ने अमरीकी सफ़ारतख़ाने पर क़ब्ज़ा कर लिया था। 2001ई० में अमरीका पर दहशतगर्दी के हमलों के बाद दोनों मुल्कों के बीच ताल्लुक़ात उस वक़्त ज़्यादा ख़राब हो गये जब पिछले राष्ट्रपति जार्ज बुश ने ईरान को 'बदी का मुसल्लस' क़रार दिया था। अमरीका का ख़याल है कि ईरान ख़ुफ़िया तौर पर जौहरी हथियार बनाने की काशिश कर रहा है। जबकि ईरान इन इल्ज़ामों की तरदीद करता है और उसका कहना है कि उसका जौहरी प्रोग्राम पुर अम्न मक़ासिद के लिए है।

ओबामा के राष्ट्रपति होने से ताल्लुक़ात में बदलाव नहीं होगा: आयतुल्लाह सै० अली ख़ामेना-ईमद०ज़ि०

ईरान के सुप्रीम लीडर के एक नुमाइन्दे ने कहा है कि बाराक ओबामा के अमरीकी राष्ट्रपति का ओहदा संभालने का मतलब ये नहीं है कि वाशिंगटन के साथ तेहरान के ताल्लुक़ात में कोई बदलाव आयेगा। सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह सै० अली ख़ामेना-ई ने अब तक ओबामा के राष्ट्रपति बनने या ईरान की तरफ बढ़ाये जाने वाले अमन के हाथ पर कोई रद्दे अमल ज़ाहिर नहीं किया था। शिमाली मग़रिबी सूबे ज़न्जान में पासदाराने इन्क़ेलाब के नुमाइन्दे हुज्जतुल इस्लाम अली माबूदी ने कहा कि हर हुकूमत के पास सुर्ख़ लकीरें हुआ करती हैं और हमारी सुर्ख़ लकीरें अमरीका और सेहयूनी हुकूमत की उजड पॉलीसियों को मुस्तरद कर रही हैं। उन्होंने कहा कि सहयूनी हुकूमत की मुख़ालेफ़त और कुचले हुए लोगों का दिफ़ाअ़ इस्लामी इन्क़ेलाब के सुतून हैं और ईरान व अमरीका के ताल्लुक़ात में ओबामा के ओहदा संभाल लेने से कोई तबदीली नहीं आयेगी।

ईरान का 'उम्मीद' नामी उपग्रह अंतरिक्ष में रवाना

ईरान ने मुल्क में तैयार पहला उपग्रह अंतरिक्ष में भेजा है। यह ख़बर सरकारी टेलीवीज़न ने दी है। टेलीवीज़न के मुताबिक़ 'उम्मीद- नामी इस उपग्रह को 1979ई० के इस्लामी इन्क़ेलाब की इस माह मनाई जाने वाली 30वीं सालगिरह के मौक़े पर लांच किया गया है। इसे रिसर्च व टेली मवासलात के लिए डिज़ाइन किया गया है। ख़ला में उपग्रह छोड़ने के लिए इस्तेमाल होने वाली बेलेस्टिक टेक्नालॉजी हथियार ले जाने के लिए भी इस्तेमाल हो सकती है, अगरचे ईरान का कहना है कि इस तरह का कोई इरादा नहीं है। टेलीवीज़न के मुताबिक़ 'पाबन्दी के बावजूद ईरानी साइंसदानों ने एक और कामयाबी हासिल की है और उन्होंने मुल्क के अन्दर तैयार पहला उपग्रह मदार में भेजा है'। ये उपग्रह मालूमात जमा करने और आलात के तजुरबे के लिए डिज़ाइन किया गया है। सरकारी टेलीवीज़न के मुताबिक़ एक से तीन माह तक मदार के चक्कर लगाने के बाद उपग्रह ज़मीन पर वापस आ जायेगा। टेलीवीज़न के मुताबिक़ इस उपग्रह के हासिल किये हुए डाटा से ईरानी महिरीन को अंतरिक्ष में बाक़ाएदा काम करने वाला उपग्रह छोड़ने में मदद मिलेगी। टेलीवीज़न के मुताबिक़ ईरान का एक उपग्रह पहले ही मदार में है लेकिन उसे 2005ई० में रूसी राकेट से अंतरिक्ष में भेजा गया था।

ये देसी मवासलाती उपग्रह 'उम्मीद' कामियाबी के साथ ज़मीन के मदार में पहुँच गया। इस से पहले ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद ने उपग्रह के मदार में पहुँचने के बाद क़ौम के नाम अपने पैग़ाम में कहा था कि "प्यारे हम वतनों! आपके लाडले सपूतों ने पहली बार मुल्क के अन्दर ही देसी तकनीक से तैयार उपग्रह को मदार में पहुँचाने में कामियाबी क़रार देते हुए कहा कि उपग्रह से हमारा कान्टेक्ट भी क़ायम हो गया है। अब इस से ज़रूरी मालूमात मिलने लगी हैं। इसी बीच 6 बड़े मुल्क जिन्में अमरीका, रूस, बिर्टेन, फ़्रांस, जर्मनी और चीन शामिल हैं उनके बड़े अफ़सरान ईरान के एटमी प्रोग्राम पर बातचीत के लिए मुलाक़ात कर रहे हैं।

फ़ातेहा ख़्वानी की गुज़ारिश

मरहूम सैय्यिदा ख़दीजा बानो नक़वी (बिन्ते मौलाना सैय्यद मुहम्मद इब्ने अल्लामा हिन्दी सैय्यद अहमद इब्ने सैय्युदुल उलमा सैय्यद इब्राहीम इब्ने मुमताज़ुल उलमा सैय्यद मुहम्मद तक़ी इब्ने सैय्युदुल उलमा सैय्यद हुसैन इब्ने हज़रत गुफ़रानमआबरह०) ने 3 अगस्त 2008ई० को दारे फ़ानी से रिहलत फ़रमाई थी। मोमिनीने केराम से गुज़ारिश है कि एक बार सूर-ए-हम्द, और तीन बार सूर-ए-तौहीद की तिलावत फ़रमाकर मरहूमा को ईसाल फ़रमाएं।

मुलतमिस सोगवारान

सैय्यद मुहम्मद अज़हर, सैय्यद मुहम्मद क़ायम, सैय्यद मुहम्मद असद, सैय्यद मुहम्मद सफ़दर (पिसरान) सैय्यद ज़हीर हुसैन, सैय्यद नुसरत अब्बास (ख़्वेशान) दुख़्तरान व अफ़रादे ख़ानदान।

ईरान के इस्लामी इन्क़ेलाब की तीसवीं सालगिरह

ख़ुदा का शुक्र है कि 11 फ़रवरी 2009ई० को ईरान के इस्लामी इन्क़ेलाब के 30 साल पूरे हो गये। नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन के अरकान अपनी तरफ से और लखनऊ के तमाम मोमिनीन की तरफ से दुआ करते हैं कि ईरान तरक़्क़ी, हक़ बयानी और हक़ परस्ती के रास्ते पर उसी तरह आगे बढ़ता रहे जैसा कि आज है ताकि इमाम ख़ुमैनी के सारे ख़्वाब पूरे हो सकें। ख़ुदावन्दे आलम वलि-ए-अम्रिल मुस्लेमीन आयतुल्लाह सै० अली ख़ामेना-ई और उनके हम मिज़ाजों को लम्बी उम्र अता फ़रामाए।

इमामबाड़ा गुफ़रानमआब में

यौमे इमाम हुसैन[अ0] और ऐतिहासिक शब बेदारी

18 फ़रवरी 2009[ई०]/22 सफ़र 1430[हि०] को शिया-सुन्नी इत्तेहाद की सम्त में इमामबाड़ा गुफ़रानमआब में एतिहासिक जल्सा 'यौमे इमामे हुसैन[अ०]' और शब बेदारी हुई इस मौक़े पर सुन्नी मक्तबे फ़िक्र के मुक़र्रिरीन और उलमा ने इत्तेहाद का मरकज़ इमाम हुसैन[अ०] की ज़ात को क़रार देते हुए क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब की तरफ से मुसलमानों में इत्तेहाद की कोशिश को बेहतरीन क़दम बताया और इस दिन को सिर्फ़ लखनऊ ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तान की अलग-अलग जगहों पर मनाने की बात कही। इमामबाड़े में शामिल हुए अक़ीदतमन्दाने इमामे हुसैन[अ०] में शिया-सुन्नी मुसलमानों की बड़ी संख्या थी। इस मौक़े पर मौलाना मुफ़्ती मुहम्द नईम अशरफ सदर आल इण्डिया तन्ज़ीमे अहलेसुन्नत ने सदारत के फ़राएज़ अन्जाम दिये और शायरे अहलेबैत जनाब क़ैसर जौनपुरी ने निज़ामत की।

शिया-सुन्नी इत्तेहाद के तौर पर मनाए जाने वाले 'यौमे हुसैन[अ०]' में ख़ास मेहमान मौलाना यह्या बुख़ारी जामा मस्जिद देहली ने अपनी तक़रीर में कहा कि तारीख़े इस्लाम में इमाम हुसैन[अ०] की शख़सियत जो अहमियत रखती है वह किसी की मोहताजे तआरुफ़ नहीं है उन्होंने दीने इस्लाम को बचाया और हर साल जो मुहर्रम होता है उन्हीं की याद ताज़ा करने के लिए होता है। उन्होंने कहा कि अगर मुसलमान उनकी ज़िन्दगी को ग़ौर से पढ़ लें तो शिया-सुन्नी अलग रह ही नहीं सकते। उन्होंने अपील की कि मुल्क की अज़मत को बरक़रार रखना है तो क़ौमी इत्तेहाद को बरक़रार रखना होगा। मुसलमानों में इत्तेहाद के अलमबरदार के तौर पर आयतुल्लाह इमाम ख़ुमैनी और मौलाना कल्बे आबिद साहब मरहूम को याद किया और इस फेहरिस्त में अपने वालिद इमामे जामा मस्जिद अब्दुल्लाह बुख़ारी को मिसाल क़रार देते हुए कहा कि सुन्नी-शिया इत्तेहाद के लिए इस तरह का सिलसिला हिन्दुस्तान की दूसरी जगहों पर भी जारी रखना चाहिए।

मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद नईम ने कहा कि इख़्तेलाफ़ पैदा करने वाले तो पैदा होते रहेंगे और अब तो यज़ीद के भी हमनवा पैदा हो गये हैं आज पूरे हिन्दुस्तान को इत्तेहाद की ज़रूरत है और मौलाना सै० कल्बे जवाद की तरफ़ से शिया-सुन्नी इत्तेहाद की सम्त में 'यौमे इमामे हुसैन[अ०]' के इन्एक़ाद को एक तहरीक क़रार देते हुए इस तहरीक को बाक़ी रखने के लिए सभी उलमा को इस सिम्त में चलना होगा। प्रोफ़ेसर ख़ान मुहम्मद आतिफ़ ने दौराने तक़रीर कहा कि जो हुसैन[अ०] इब्ने अली[अ०] के तरफ़दार हैं उन्हें दुनिया की दौलत से सरोकार नहीं और उन्हें किसी भी तरह ख़रीदा नहीं जा सकता उन्होंने इमाम हुसैन[अ०] का ज़िक्र करते हुए कहा कि नाना और नवासे की सुन्नत में मुताबिक़त पाई जाती है इमाम हुसैन[अ०] ने यज़ीद की बैअत न करके अपने नाना के दीन को बचाया।

उन्होंने ज़माने के नाम नेहाद उलमा पर चोट की कि आज वह सियासी ओहदा हासिल करने के लिए सब भूले हुए हैं। मौला मिशन मलिहाबाद के सदर बाबा ज़फ़र ख़ाँ ने कहा कि कर्बला में ढाये गये मज़ालिम की मिसाल दुनिया में कहीं नहीं मिलती जिसकी याद हर साल मनाई जाती है और क़यामत तक मनाई जाती रहेगी। उन्होंने शिया-सुन्नी इत्तेहाद के लिए क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै कल्बे जवाद की तरफ से उठाये गये इस क़दम पर कहा कि कुछ नाम नेहाद उलमा मुसलमानों में तफ़रक़ा डालने की बातें करते हैं। आख़िर में मौलाना सै० कल्बे जवाद ने तमाम लोगों का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि वक़्त की ज़रूरत को महसूस करते हुए इस तरह की शुरुआत की है और इसके ज़रिये साज़िशों को नाकाम बनाया है जिसका मरकज़ लखनऊ को बनाया जा रहा है। इत्तेहाद का बेहतरीन मरकज़ इमाम हुसैन[अ०] की ज़ात है क्योंकि तमाम मज़ाहिब के मुक़द्दस मक़ामात पर उसी मज़हब के मानने वाले जाते हैं जबकि इमाम हुसैन[अ०] की ज़ात से जुड़े हुए इमामबाड़ों में हर मज़हब का मानने वाला आता है जो इत्तेहाद का बेहतरीन मरकज़ है उन्होंने इमाम अब्दुल्लाह बुख़ारी को सुन्नी-शिया इत्तेहाद की एक मिसाल बताया ख़ास तौर से यह कि लखनऊ के जुलूसहाए अज़ा की बहाली की तहरीक में वह भी शामिल रहे हैं। मातमी अन्जुमनों की नौहा ख़्वानी के क़ब्ल मरसिया ख़्वान ख़लील अहमद और उनके साथियों ने अपने ख़ास अन्दाज़ में मरसिया पेश किया और सुबह होने तक बिरादराने अहलेसुन्नत की मातमी अन्जुमनों की नौहा ख़्वानी जारी रही और बहुत सी अन्जुमनों ने अपना-अपना कलाम पेश किया।

Permanent Namaz Timing As Per Lucknow Horizon

Month April 2009

तारीख	र० सानी	दिन	फ़ज्र	तुलूअ	ज़ोहर	गुरूब	मग़रिब	लखनऊ से पहले		लखनऊ के बाद	
1	5	बुध	4:39	5:57	12:11	6:24	6:34	इलाहाबाद	5	अहमदाबाद	32
2	6	जुमेरात	4:38	5:56	12:11	6:24	6:34	आज़मगढ़	9	आगरा	12
3	7	जुमा	4:37	5:55	12:11	6:25	6:35	अयोध्या	5	इन्दौर	21
4	8	सनीचर	4:36	5:54	12:11	6:25	6:35	बाराबंकी	2	उन्नाव	2
5	9	इतवार	4:35	5:53	12:10	6:26	6:36	बस्ती	8	बदायूँ	8
6	10	पीर	4:33	5:51	12:10	6:26	6:36	बनारस	8	बरेली	6
7	11	मंगल	4:32	5:50	12:10	6:27	6:37	बलिया	12	मुम्बई	33
8	12	बुध	4:30	5:49	12:09	6:27	6:37	बहराइच	4	बैंगलौर	17
9	13	जुमेरात	4:29	5:48	12:09	6:28	6:38	बांदा	6	भोपाल	14
10	14	जुमा	4:28	5:47	12:08	6:29	6:39	अकबरपुर	6	पीलीभीत	5
11	15	सनीचर	4:26	5:46	12:08	6:29	6:39	पटना	18	झांसी	10
12	16	इतवार	4:25	5:45	12:08	6:29	6:39	प्रतापगढ़	5	हैदराबाद	10
13	17	पीर	4:24	5:44	12:08	6:30	6:40	पूर्णिया	27	दिल्ली	15
14	18	मंगल	4:23	5:43	12:08	6:30	6:40	जौनपुर	8	[illegible]	13
15	19	बुध	4:22	5:42	12:07	6:31	6:41	दरभंगा	20	रामपुर	3
16	20	जुमेरात	4:21	5:41	12:07	6:31	6:41	रांची	18	श्रीनगर	21
17	21	जुमा	4:20	5:40	12:07	6:31	6:41	छपरा	16	सहारनपुर	14
18	22	सनीचर	4:19	5:40	12:07	6:32	6:42	रायबरेली	4	सीतापुर	4
19	23	इतवार	4:18	5:39	12:07	6:32	6:42	सीवान	14	शाहजहाँपुर	4
20	24	पीर	4:17	5:38	12:06	6:33	6:43	24 परगना	30	अलीगढ़	12
21	25	मंगल	4:15	5:37	12:06	6:34	6:44	ग़ाज़ीपुर	11	फ़तेहपुर	3
22	26	बुध	4:14	5:36	12:06	6:34	6:44	फ़ैज़ाबाद	3	कानपुर	3
23	27	जुमेरात	4:13	5:35	12:06	6:35	6:45	कोलकाता	31	ग्वालियर	12
24	28	जुमा	4:12	5:34	12:06	6:35	6:45	[illegible]	1	[illegible]	3
25	29	सनीचर	4:11	5:33	12:05	6:36	6:46	गोंडा	4	मुरादाबाद	9
26	30	इतवार	4:10	5:31	12:05	6:36	6:46	गोरखपुर	10	मेरठ	13
27	1 जमा०	पीर	4:09	5:30	12:05	6:37	6:47	गया	11	मुज़फ़्फ़रनगर	13
28	2	मंगल	4:08	5:30	12:05	6:37	6:47	मुंगेर	12	जयपुर	16
29	3	बुध	4:07	5:30	12:05	6:38	6:48	मिर्ज़ापुर	7	मैनपुरी	6
30	4	जुमेरात	4:06	5:29	12:05	6:38	6:48	मुज़फ़्फ़रपुर	19	हरदोई	4
								भागलपुर	19	[illegible]	36